डॉ. मुकेश डी. पटेल
श्री एम.आर.डी
कला एवं ईईलहेर कोसाडीया
वाणिज्य महाविद्यालय, चीखली
जि.नवसारी

सेमेस्टर-४

हिंदी अनिवार्य

आकाश-दीप

ले.जयशंकर प्रसाद

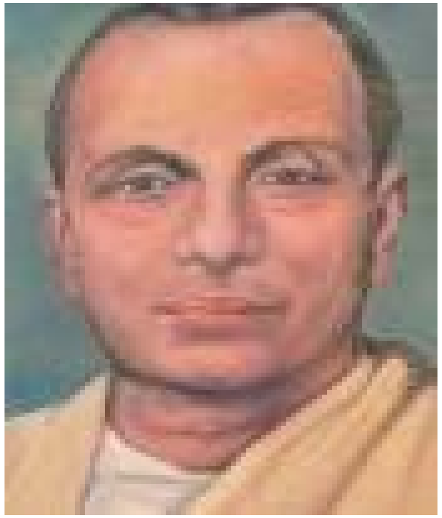

- नाम : जयशंकर 'प्रसाद'
- जन्म : 30 जनवरी 1889 वाराणसी

- प्रकाशित कृतियाँ
- काव्य - झरना, आँसू, लहर, कामायनी, प्रेम पथिक
  नाटक- स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त ध्रुवस्वामिनी, जनमेजय का नाग यज्ञ राज्यश्री,अजातशत्रु
  कहानी संग्रह - छाया प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आंधी इंद्रजाल
  उपन्यास- कंकाल तितली इरावती
- निधन : 14 जनवरी 1937

- ‘आकाश-दीप’ प्रसादजी की श्रेष्ठ कहानियों में से एक है।

कथानक

'आकाशदीप' कहानी का कथानक निरंतर गतिशील बना रहता है। पाठक के मन में रह-रह कर जिज्ञासा एवं कौतूहल की भावना पनपती रहती है। बन्दी-वार्तालाप के साथ प्रारम्भ हुआ कहानी का कथानक मुक्त होने पर चम्पा और जलदस्यु बुद्धगुप्त के प्रेमालाप में बदल जाता है। पहले तो चम्पा के मन में उसके प्रति घृणा रहती है क्योंकि वह बुद्धगुप्त को अपने पिता का हत्यारा मानती है। परन्तु बुद्धगुप्त द्वारा मणिभद्र का षडयंत्र विफल किये जाने की बात सुनकर उसके भीतर बुद्धगुप्त के प्रति घृणा के साथ-साथ प्रेम की भावना उत्पन्न हो जाती है।यहाँ भी उनका विवेक और चातुर्य दोनों के सम्बन्धों को मधुर बनाने में सहायक होता है।

चरित्र-चित्रण

आकाशदीप कहानी में केवल दो-तीन पात्र हैं - चम्पा, बुद्धगुप्त और जया।एक पात्र नायक भी है, किन्तु इसमें चम्पा और बुद्धगुप्त दो ही महत्त्वपूर्ण हैं।बुद्धगुप्त एक जलदस्यु है और चम्पा की दृष्टि में चम्पा के पिता का हत्यारा है, किन्तु वह अत्यन्त साहसी और पराक्रमी है।वह जरा-सी देर में नायक को परास्त कर देता है। पहले वह नितान्त क्रूर-कठोर स्वभाव का था, किन्तु चम्पा के प्यार ने उसे कोमल हृदय वाला बना दिया। चम्पा अत्यन्त भावुक, साहसी, निभीक और दृढ़ निश्चयी है।उसे पता है कि उसके पिता की हत्या जलदस्यु बुद्धगुप्त और उसके साथियों ने की है, इसीलिए वह बुद्धगुप्त को प्यार करके भी घृणा करती है।उसके मन में बदले की भावना विद्यमान है, किन्तु जब उसका भावूक हृदय उसे धोखा दे देता है, तब वह बुद्धगुप्त को प्यार करने लगती है, तो चम्पा अपनी कटार निकालकर समुद्र में फेंक देती है। किन्तु विवाह का प्रस्ताव करने वाले बुद्धगुप्त को वह साफ इन्कार कर देती है और स्पष्ट शब्दों में कहती है- "मैं तुमसे घृणा करती हूँ, फिर भी तुम्हारे लिए मर सकती हैं।"

कथोपकथन

- आकाशदीप कहानी में संवादों का अत्यन्त महत्त्व है, क्योंकि इस कहानी की शुरुआत ही संवादों के द्वारा होती है।इसके संवाद संक्षिप्त, रोचक, कौतूहलवर्द्धक एवं सजीव तथा कथानक को विस्तार देने वाले हैं। इनके द्वारा पात्रों के चरित्र पर व्यापक प्रकाश भी पड़ता है। कहानी के प्रारम्भ में ही लेखक ने नाटकीय संवादों की योजना किया है -
- "बंदी!"
- "क्या है? सोने दो।"
- "मुक्त होना चाहते हो?"
- "अभी नहीं, निद्रा खुलने पर, चुप रहो।"
- "फिर अवसर न मिलेगा।"
- "बडा शीत है, कहीं से एक कंबल डालकर कोई शीत से मुक्त करता।"
- "आंधी की संभावना है। यही एक अवसर है। आज मेरे बंधन शिथिल हैं।"
- "तो क्या तुम भी बंदी हो?"
- "हां, धीरे बोलो, इस नाव पर केवल दस नाविक और प्रहरी है।"
- "शस्त्र मिलेगा?"
- "मिल जाएगा। पोत से संबद्ध रज्जु काट सकोगे?"
- "हां।"

वातावरण

‘आकाशदीप’ कहानी में प्रसाद जी ने प्राचीन काल के ऐतिहासिक घटना वातावरण का सृजन किया है। इस कहानी में प्राचीन काल में भारतीय जलयानों की समुद्री का वर्णन और दूरस्थ 'बालीद्वीप', 'चम्पाद्वीप' आदि का उल्लेख अत्यन्त सजीवता के साथ कसा है, उस समय आधिकांश समुद्री यात्राएँ होती थी। यातायात और व्यापार के लिए भी समुद्री अथवा जलीय मार्ग का प्रयोग किया जाता था और उसमें प्राय: लडाई-झगड़े भी होते रहते थे। जलदस्युओं के आक्रमण बराबर हुआ करते थे. जिससे लोग सतर्क रहते थे। इन सारे तथ्यों को प्रसाद जी ने इस कहानी के वातावरण में कुशलतापूर्वक सँजोया है।

भाषा-शैली

‘आकाशदीप’ कहानी की भाषा तत्सम प्रधान खड़ी बोली है, जिसमें साहित्यिक शब्दावलियों का प्रचुर प्रयोग हुआ है। इसमें प्रसाद जी ने नाटकीय एवं भावात्मक दोनों प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया है। कहानी के प्रारम्भ में दोनों बन्दियों के बीच में होने वाला संवाद नाटकीय शैली का सुन्दर उदाहरण है। भावात्मक शैली का एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है- "तारक खचित नील अम्बर' और नील समुद्र के अवकाश में पवन ऊधम मचा रहा था। अन्धकार से मिलकर पवन दुष्ट हो रहा था। समुद्र में आन्दोलन था। नौका लहरों में विकल थी।" इस प्रकार हम देखते हैं कि भाषा-शैली की दृष्टि से 'आकाशदीप प्रसाद जी की सफल कहानी है। भावों एवं प्रसंगों की अनुरूपता उसकी निजी विशेषता है।

उद्देश्य

‘आकाशदीप’ कहानी का शीर्षक अत्यन्त संक्षिप्त एवं सार्थक है।वह स्वयं में उद्देश्यपूर्ण है।चम्पा कण्डील सजाकर द्वीप स्तम्भ पर रखती है।यह उसका कर्त्तव्य है।उसकी माँ भी उसके पिता का मार्ग प्रशस्त करने के लिए दीपदान किया करती थी।चम्पा उसी का अनुसरण करती है।इस कहानी का उद्देश्य वैयक्तिक चरित्र की स्थापना करना है।चम्पा बुद्धगुप्त को प्यार करती है, किन्तु अपने पिता के हत्यारे से वह प्यार करके भी घृणा करती है। यह उसकी चारित्रिक विशेषता है, जिसे स्थापित करने में प्रसाद जी को पूर्णत: सफलता मिली है।

- -

.

शीर्षक

‘**आकाशदीप’ कहानी** का शीर्षक अत्यन्त संक्षिप्त एवं सार्थक है। इस **कहानी का उद्देश्य** वैयक्तिक चरित्र की स्थापना करना है। चम्पा बुद्धगुप्त को प्यार करती है, किन्तु अपने पिता के हत्यारे से वह प्यार करके भी घृणा करती है।

अत: उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि कहानी-कला के तत्त्वों के आधार पर समीक्षा करने के उपरान्त 'आकाशदीप' प्रसाद जो की एक चरित्रप्रधान सशक्त एवं सफल कहानी दृष्टिगोचर होती है।

धन्यवाद